श्रवण
तुमने सुना सही काले अक्षर काग़ज़ पे,
गोरे गोरे जीवन छायाचित्र खींच जाते हैं।
नेह के सम्बन्ध ऐसा स्नेह पैदा करते हैं,
चॉदनी उगाते और चकोर रीझ जाते हैं।
लिख दिया रख दिया जैसे दिया आरती का,
काग़ज़ संग संग उड़ जाना सीख जाते हैं।
बॉहों में झुलाते कभी,कॉधें पे उठाते कभी,
बड़ी बड़ी ऑखों वाले नयना भीज जाते हैं।
स्वस्तिमाल अंगराग मला गंगाजल का।
केसरी बदन ने जो नदिया का जल छुआ,
इक पल में हो गया, गुलाबी रंग जल का।
फूलों जैसी रंगवाली हुई है तुम्हारी देह,
पैजनियां जो छनकी गुलाबी रंग छलका।
श्रवण
हमने सुना तो फिर तुमने भी सुना होगा,
भारत की जो भारती है छाया पुरुषार्थ की।
जानकी श्रीराम जी की,राधिका कन्हैया जी की,
पार्वती श्री शंकर जी की पांचाली है पार्थ की।
कस्तूरबा है गांधी जी की ललिता बहादुर की,
यशोदा है नन्द जी की यशोधरा सिद्धार्थ की।
रामायण तुलसी की, मधुशाला बच्चन की,
पयोधर कृतिका महादेवी की प्रसाद की।
- डॉ. सुशील गुरू,
५३/बी इन्द्रपुरी भोपाल-२१ मो.९४२५०२५४३०
सह सम्पादक, कर्मनिष्ठा